

भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए



# संकल्प

मिधानि की छह माही राजभाषा गृह पत्रिका

ई-पत्रिका अंक 6

अक्तूबर 2022 - मार्च 2023

वर्ष 14, अंक 26



भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के कर कमलों से  
मिधानि की वाइड प्लेट मिल सुविधा का भव्य उद्घाटन  
[https://www.youtube.com/watch?v=Wv\\_KPmGNiE](https://www.youtube.com/watch?v=Wv_KPmGNiE)



27 दिसंबर, 2022 को भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के कर कमलों से मिधानि की वाइड प्लेट मिल सुविधा का भव्य उद्घाटन संपन्न हुआ। तेलंगाना के राज्यपाल डॉ. तमिलीसाई सौंदर्यराजन, श्रीमती सत्यवतीराठौड, अनुसूचित जनजाति, महिला व बाल कल्याण मंत्री, तेलंगाना सरकार, मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा, महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का स्वागत करते हुए।



भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू मिधानि की वाइड प्लेट मिल सुविधा में प्रवेश करते हुए। साथ में हैं, मिधानि के सीएमडी डॉ. एसके झा और निदेशक (वित्त) श्री एन. गौरी शंकर राव।



# संकल्प



मिधानि की छह माही राजभाषा गृह पत्रिका  
वर्ष-14 अंक -26 | अक्तूबर '22 - मार्च '23 | ई-पत्रिका अंक 6

## संपादक मंडल

### प्रधान संरक्षक

डॉ. संजय कुमार झा

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

### संरक्षक

श्री एन. गौरी शंकर राव

निदेशक (वित्त)

श्री टी. मुत्तुकुमार

निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

### परामर्शदाता

श्री रामकृष्ण राव

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

### संपादन व डिजाइनिंग

डॉ बी.बालाजी

प्रबंधक

हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार

तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

### संपादन सहयोग

श्रीमती डी. वी. रत्नाकुमारी

वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

श्री वासुदेव

सहायक (हिंदी अनुवादक)

### संपर्क पता :

संपादक 'संकल्प'

कंचनबाग, हैदराबाद - 500 058

ई-मेल: b.balaji@midhani-india.in

टेलीफोन: 040-24184325, 4298

पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क है। यह केवल आंतरिक वितरण के लिए है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

## इस अंक में

संदेश - 2-6

संपादकीय - 7

राजभाषा - 8-22

- रिपोर्ट: मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रसार में परिवार की भूमिका विषय पर व्याख्यान
- विश्व हिंदी दिवस 2023 समारोह की झलकियाँ
- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मिधानि का दौरा
- मिधानि को राजभाषा क्षेत्र में प्राप्त पुरस्कार
- डीडीपी द्वारा मिधानि का राजभाषाई निरीक्षण
- हिंदी कार्यशालाएँ
- लेख : राजभाषा कार्यान्वयन : दायित्व बोध का प्रश्न  
- डॉ. संजय कुमार झा, सीएमडी, मिधानि
- लेख : कार्यालयी कामकाज में हिंदी की भूमिका  
- गरिमा ओझा, सहायक प्रबंधक, वि. एवं ले.

तकनीकी लेख - 23-28

- "भ्रष्टाचार मुक्त भारत विकसित भारत" के लिए डेटा क्रांति  
- के. लक्ष्मी प्रसन्ना, उप प्रबंधक, आईटी
- रेलवे एक्सल के निर्माण के लिए विकास और प्रक्रिया प्रवाह  
- भवनीश कुमार सिंह, उप प्रबंधक, एचटी

कविता - 29-31

- प्रमोशन का चक्कर, जब छाता है  
- विजय कुमार चौधरी, तकनीशीयन-1, मेल्ट शॉप
- शिखर और नींव - दीपाली निगुडकर, अध्यापिका
- 'तुम' से 'हम' होना - अनिल कुमार छीपा, प्रबंधन प्रशिक्षु, मैकेनिकल

मिधानि की विविध गतिविधियाएँ - 20, 22, 32-37, 40

- 'डेफेक्सपो 2022' में भागीदारी
- 'क्वालिटी सर्कल्स' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम
- रोज़गार मेला
- 'व्यवस्थित सुधार' पुस्तिका जारी
- समन्वय-2022
- स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन
- वियतनाम के डिफेंस एक्सपो 2002 में भागीदारी
- केएमएमएल प्लांट की सुविधा वृद्धि पर चर्चा
- एयरो शो 'एयरो इंडिया 2023'
- टाइटन 31 कोल्ड रोलड शीट का उद्घाटन
- अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2023 समारोह

धरोहर - 38

- कहानी - शत्रु - अज्ञेय



अमित शाह  
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री  
भारत सरकार

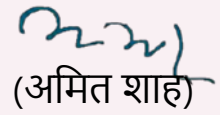
## अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की शुभकामनाएँ

जब कोई बच्चा अपनी मातृभाषा में पढ़ता, बोलता और सोचता है, तो इससे उसकी सोचने की क्षमता, तर्क शक्ति, विश्लेषण और शोध की क्षमता बढ़ती है।

इसी को ध्यान में रखते हुए मोदी सरकार ने नई शिक्षा नीति के माध्यम से मातृभाषा में शिक्षा पर जोर दिया है, यही भारत के स्वर्णिम कल का आधार बनेगा।

यह दिन अपनी मातृभाषा से जुड़कर उसे और अधिक समृद्ध करने के संकल्प का दिन है।

जब व्यक्ति अपनी मातृभाषा को समृद्ध करेगा तभी देश की सभी भाषाएँ समृद्ध होंगी और देश भी समृद्ध होगा, अपनी मातृभाषा के अधिकतम उपयोग करने का संकल्प लें।

  
(अमित शाह)

पीआईबी से साभार



प्रधान संरक्षक  
डॉ. संजय कुमार झा  
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक  
ई-मेल: cmd@midhani-india.in

## शुभकामना संदेश

प्रिय साथियो,

विश्व में भाषा, संस्कृति, कला तथा विज्ञान के क्षेत्र में भारत का स्थान सदैव समृद्ध राष्ट्र के रूप में अग्रणी रहा है। संस्कृत में संग्रहित साहित्य विश्व को मार्गदर्शन देता रहा है। कालांतर में विदेशी आक्रांताओं ने भारत की संस्कृति और सभ्यता के चिह्नों को खंडित-ध्वस्त किया और ग्रंथों को जला दिया, जिसके फलस्वरूप भारत की नई पीढ़ियों के पास अपनी कला तथा विज्ञान संबंधी ज्ञान पूर्णतः नहीं पहुंच पाया। संस्कृत तथा उसकी बाद की भाषाओं में बचे हुए साहित्य ने हमारी संस्कृति बचाने में महत्तर कार्य किया है। इस क्रम को भारत की राष्ट्रीय भाषाएँ व उनमें लेखन करने वाले लेखकों ने आगे बढ़ाना जारी रखा है, जिसमें हिंदी भाषा का भी योगदान महत्वपूर्ण है। हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहक है। राजभाषा के रूप में स्थापित किए जाने के बाद से हिंदी भाषियों और अन्य भाषा समुदायों को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में हिंदी को स्थापित करने का कार्य अधिक गंभीरता से किया जा रहा है।

मिधानि ने राजभाषा को प्रारंभ से ही पूर्ण हृदय के साथ अपनाया है एवं उसे अपनी कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया है। मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नियमित रूप से आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं में कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।

कर्मचारियों की राजभाषा कार्यान्वयन की प्रतिबद्धता को अपने लेखन कौशल के माध्यम से दर्शाते हुए मिधानि की गृह पत्रिका 'संकल्प' का नवीन अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। आशा है यह अंक भी आपका ज्ञानवर्धन करने में सफल होगा। सभी रचनाकारों और हिंदी अनुभाग को इस अंक की सफलता के लिए अशेष शुभकामनाएँ।

  
डॉ. संजय कुमार झा



सरंक्षक

श्री एन. गौरी शंकर राव  
निदेशक (वित्त)

ई-मेल: [df@midhani-india.in](mailto:df@midhani-india.in)

## शुभकामना संदेश

प्रिय साथियो,

वर्तमान समय में हिंदी शिक्षा, शोध, ज्ञान-विज्ञान, वेब और सोशल मीडिया हर जगह अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है और यह हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयासों के लिए शुभ संकेत है। इसके साथ ही, हिंदी के राजभाषा रूप को आगे बढ़ाना, उसकी विकास यात्रा को गति प्रदान करना हम सभी का नैतिक कर्तव्य और सामूहिक दायित्व है।

किसी भी संगठन में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालयीन कामकाज में हिंदी लेखन को प्रोत्साहित करने में हिंदी पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है। 'संकल्प' पत्रिका भी राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती आई है और आगे भी हमारे कर्मचारियों में हिंदी की अलख जगाती रहेगी।

'संकल्प' का नवीन अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। 'संकल्प' पत्रिका के नवीन अंक को अपनी रचनाओं से समृद्ध करने वाले सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को पत्रिका की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

  
एन. गौरी शंकर राव



संरक्षक

श्री टी. मुत्तुकुमार

निदेशक ( उत्पादन एवं विपणन)

ई-मेल: [dpm@midhani-india.in](mailto:dpm@midhani-india.in)

## शुभकामना संदेश


प्रिय साथियो,

भारत एक बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक देश है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने और आजादी की लहर को पूरे देश में फैलाने में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी की इसी विशेषता को ध्यान में रखते हुए सर्वसम्मति से हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया।

प्रत्येक संगठन में विभिन्न प्रांतों और भाषा समुदायों के लोग अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी कार्यस्थल पर बहुभाषी जनशक्ति के मध्य संप्रेषण का एक प्रमुख माध्यम बनी है। यह हिंदी भाषा को किसी भी भाषिक वर्ग द्वारा सहजता से आत्मसात कर पाने की वजह से ही संभव हो पाया है।

मिधानि में कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति जागरूक करने के लिए नियमित अंतराल में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही, राजभाषा में कार्यालयीन कामकाज को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन योजना का भी संचालन किया जा रहा है। आपको यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने वाले कर्मचारियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, जो इस बात का द्योतक है कि मिधानि राजभाषा कार्यान्वयन के लिए लगातार प्रयासरत है।

मिधानि की गृह पत्रिका 'संकल्प' का मुद्रण भी नियमित रूप से किया जा रहा है। जिसको मिधानि के कर्मचारी अपनी लेखन प्रतिभा से समृद्ध करते हैं। 'संकल्प' का नवीन अंक आप सभी के ज्ञानवर्धन के लिए पुनः प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस सफल प्रयास के लिए सभी लेखक और हिंदी अनुभाग बधाई के पात्र हैं।

  
टी. मुत्तुकुमार



परामर्शदाता

श्री ए. रामकृष्ण राव

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

ई-मेल: ramakrishna@midhani-india.in

## शुभकामना संदेश

प्रिय साथियो,

विगत वर्षों में मिधानि में हिंदी को संघ की राजभाषा नीति की अपेक्षानुसार उचित स्थान देने का प्रयास किया गया है। कार्यालय में वरिष्ठ प्रबंधन से लेकर कर्मचारियों तक सभी अपने कार्यों में हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन में एक नए उत्साह का संचार हुआ है।

राजभाषा की स्वीकार्यता के साथ इसमें कार्य करने के लिए एक वातावरण निर्मित हुआ है। मिधानि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा के प्रयोग के संबंध में जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सभी के सार्थक प्रयास जारी हैं।

इसी क्रम में मिधानि की गृह पत्रिका 'संकल्प' के छह माही अंक का प्रकाशन भी निर्धारित समय पर एवं निरंतरता के साथ किया जा रहा है। हर्ष का विषय है कि 'संकल्प' का नवीन अंक पुनः आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

मुझे आशा है कि इस अंक के माध्यम से पाठकों को मिधानि की गतिविधियों की जानकारी के साथ-साथ सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा। इस प्रयास के लिए सभी लेखकों और पत्रिका के सफल संपादन के लिए हिंदी अनुभाग को हार्दिक शुभकामनाएं।

ए. रामकृष्ण राव



## भाषा सीखने से आती है

भाषा सीखने से आती है। यह अर्जित कला है। बालक माताओं की कोख से भाषा सीखकर जन्म नहीं लेते। जन्म के बाद अपनी माँ की जिह्वा से सीखते हैं, माँ से सीखते हैं। इसीलिए तो बालक की प्रथम भाषा को मातृभाषा कहा जाता है। इसे ही अंग्रेजी में मदर टंग कहते हैं। भाषा परिजनों, मित्रों आदि से भी सीखी जाती है। वह परिवेश जिसमें बालक पलता है, वहाँ जिस भाषा का व्यवहार होता है, बालक वह भाषा भी सहजता से सीखता है। अतः यह कहना उचित ही होगा कि बातचीत के दौरान जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है वे शब्द निरंतर सुनने से परिचित हो जाते हैं। भाषा परिचित होने लगती है। यदि कोई शब्द अन्य भाषा का है, तो वह शब्द भी अपनी भाषा का लगने लगता है। अब ममी, डैडी, थैक्यू, सॉरी, प्लीज आदि शब्दों को ही ले लीजिए। कहने का अभिप्राय यह है कि जिस भाषा का व्यवहार निरंतर किया जाता है, जिन शब्दों का प्रयोग निरंतर किया जाता है, वह भाषा, वे शब्द उच्चारण और समझने में आसान लगने लगते हैं। इसके विपरीत जिस भाषा का व्यवहार कम या नहीं होता है, जिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है, वह भाषा व वे शब्द लुप्त होने लगते हैं। और, कालांतर में वह भाषा और वे शब्द मृत हो जाते हैं।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में इसीलिए हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में प्रचारित व प्रसारित करने का कार्य निरंतर चलाया जा रहा है, ताकि इसका प्रयोग जारी रहे। कार्यालयों में काम करने वाले अधिकतर कर्मचारी अंग्रेजी माध्यम से पढ़-लिख कर आते हैं और अंग्रेजी में काम करना उनके लिए सरल व सहज होता है। जब उन्हें हिंदी में काम करने के लिए कहा जाता है तो अभ्यास के अभाव में उन्हें कठिनाई होने लगती है। यहाँ तक देखा गया है कि वे अपनी मातृभाषा में भी काम करने के लिए सहजता महसूस नहीं करते क्योंकि उनके लिखने वाली भाषा अंग्रेजी बन गई है। हिंदी अनुभाग के कर्मी बड़ी लगन के साथ कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित व प्रशिक्षित करते रहते हैं ताकि वे हिंदी भाषा का प्रयोग करने में सहजता का अनुभव कर सकें। अस्तु।

मिधानि में हिंदी का वातावरण दिन-प्रतिदिन शुद्ध होता जा रहा है। प्रतिवर्ष हिंदी में काम करनेवालों की संख्या बढ़ रही है। प्रबंधन इसे प्रोत्साहित भी कर रहा है। तकनीकी का प्रयोग हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका 'संकल्प' में मिधानि की गतिविधियों और कर्मचारियों द्वारा लिखे निबंध, कविता, तकनीकी लेख आदि निरंतर हिंदी में प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस पत्रिका द्वारा कंपनी में हो रहे कामकाज को हिंदी भाषा के माध्यम से कर्मचारियों तक पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। इससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बहुत लाभ हो रहा है। आशा है, संकल्प का यह अंक आपको पसंद आएगा और मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करेगा। इस अंक के लेखकों को धन्यवाद।



(डॉ. बी. बालाजी)

## मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रसार में परिवार की भूमिका विषय पर व्याख्यान



डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, दीप प्रज्वलन

“विश्व में आज हिंदी का बड़ी तेजी से प्रसार हो रहा है। इसमें प्रवासी भारतीयों का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने भारत की संस्कृति को बचाए रखने के लिए भारत की भाषा हिंदी को अपनाया है। देश विदेश में हिंदी के प्रचार-प्रसार में रामायण और हिंदी फिल्मों की भी अहम भूमिका रही है। भारतवासी को चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा का प्रयोग अपने परिवार में और राष्ट्रभाषा का प्रयोग अपने दैनिक कामकाज के लिए करते रहें। अंग्रेजी के प्रभाव में आकर अपनी भाषा-अपनी धरोहर को नष्ट न करें।” कहा हिंदी की वरिष्ठ साहित्यकार, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. अहिल्या मिश्र ने। उन्होंने मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि),

हैदराबाद में उद्यम की स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित किए जा रहे व्याख्यान शृंखला की कड़ी और विश्व हिंदी दिवस समारोह 2023 के उपलक्ष्य में **मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रसार में परिवार की भूमिका विषय** पर आयोजित विशेष व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि माँ, बेटी, मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का सम्मान करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यह सीख परिवार से ही शुरू होनी चाहिए। बालकों को परिवार के वातावरण में जिस भाषा और संस्कृति की सीख मिलती है, वही वह अपने दैनिक जीवन में अपनाते हैं। समाज और दुनिया के साथ रू-ब-रू होने पर उसी का व्यवहार करते हैं। इसीलिए माताओं,



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space



दादियों और नानियों पर विशेष जिम्मेदारी है कि वे अपने बालकों को अपनी भाषा और संस्कृति का अवश्य ज्ञान कराएँ। उन्हें अपनी भाषा सिखाएँ। अपनी भाषा से प्राप्त ज्ञान निर्विवाद रूप से प्रथम श्रेणी का होता

है।



अवसर पर मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ संजय कुमार झा ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत की जनता भारतीय

संस्कृति, लोकगीत और हिंदी फिल्म आदि से काफी जुड़ी हुई है। इनके माध्यम से हिंदी का प्रसार बहुत तेजी से हुआ है। सरकारी कामकाज के साथ-साथ आम जनता में हिंदी के प्रसार के लिए विश्व हिंदी दिवस जैसे समारोह अत्यंत कारगर सिद्ध होते हैं। मिधानि में सांस्कृतिक कार्यक्रम व विशेष व्याख्यान के

आयोजन का उद्देश्य है कि मिधानि में हिंदी के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार किया जा सके। उन्होंने सभी उपस्थित कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल कार्यालय में ही नहीं बल्कि समाज में भी होना चाहिए जिसके लिए हम सब को कार्यालय के बाहर के कार्यकलाप हिंदी में करने चाहिए। उन्होंने मिधानि के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि मिधानि में भाषा और संस्कृति के संयोजन से राष्ट्रीयता की भावना जगाने का महत्तर कार्य किया जा रहा है।



उद्यम के मुख्य सतर्कता अधिकारी डॉ. उपेंद्र वेन्नम, आईपीओएस ने "डाक टिकट के माध्यम से हिंदी का प्रसार" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि न केवल भारत में बल्कि विदेशों में डाक टिकटों के

माध्यम से हिंदी का प्रसार बहुत पुराना है। भारत सहित मॉरिशस, फिजी, वेंडा आदि देशों में भी हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस तथा विश्व हिंदी सम्मेलनों के अवसर पर देवनागरी लिपि में डाक टिकट जारी करने का प्रचलन है। भारतीय संस्कृति, महात्मा गांधी, विवेकानंद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आदि से संबंधित डाक टिकट जारी होते रहते हैं। इससे हिंदी के महत्व



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space



को रेखांकित किया जा सकता है।

मिधानि में स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित किए जा रहे व्याख्यान शृंखला की कड़ी और विश्व हिंदी दिवस समारोह 2023 के अवसर पर आयोजित व्याख्यान का शुभारंभ डॉ. अहिल्या मिश्र, डॉ. संजय कुमार झा व श्रीमती कल्पना झा, डॉ. उपेंद्र वेन्नम व श्रीमती स्वप्ना वेन्नम द्वारा दीप प्रज्वलन व डॉ. बी. बालाजी द्वारा गणेश वंदना से किया गया। रोहित निगुडकर, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा) ने उपस्थित कर्मचारियों व उनके परिवार सहित गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। इस अवसर पर विशेष व्याख्यान के साथ ही मिधानि के कर्मचारियों के परिजनों के लिए अंत्याक्षरी प्रतियोगिता और बच्चों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नृत्य, कविता पाठ, व गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में गरिमा ओझा, सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा) के परिवार ने प्रथम, प्रतीक

शर्मा, प्रबंधक (विपणन) के परिवार ने द्वितीय तथा अमित सिंह, प्रबंधक (विपणन) व वर्षा, कनिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा) के परिवारों ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। इसी क्रम में अन्य प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले – अक्षया, प्रिया शंमुखी, प्रचिती

निगुडकर, अनन्य शर्मा, शसिता जैन, आत्रेयी मलिक, सान्वी दुर्गा, साई श्रद्धा, विहान वजस, प्रत्यूषा साहू, अश्विनी, मृदुला को उत्कृष्टता पुरस्कार तथा प्रतिभागी यामिनी तेजस, जागृति, पल्लवी, साहिती, त्रिशा सिंह, निहारिका, साई पूजा, दुर्गा, सृजना और बी. निहारिका को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए। प्रतियोगिताओं के निर्णायक, बीपीडीएवी स्कूल के प्राध्यापक – संतोष, दीपाली, सिंधु, साई ज्योति, शैलजा, अपर्णा दीप्ति, रेवती, पार्वती तथा नीना साह को स्मृति चिह्न भेंट किए गए।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता तथा कार्यक्रम का संचालन उद्यम के उप प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार) डॉ बी बालाजी ने किया। समारोह के सफल आयोजन में हिंदी विभाग की श्रीमती डी. वी. रत्नाकुमारी, अवर कार्यपालक का सक्रिय सहयोग रहा।

विश्व हिंदी दिवस समारोह 2023 के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा उपलक्ष्य में आयोजित अंत्याक्षरी, कविता पाठ, गायन, नृत्य प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने की झलकियाँ





समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space





दि. 11.11.2022 को मिश्र धातु निगम लिमिटेड का माननीय संसद सदस्य (राज्यसभा) श्री रामचंद्र जांगडा जी की अध्यक्षता में संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया गया। संसदीय राजभाषा समिति प्रश्नावली पर पीपीटी प्रस्तुतीकरण के दौरान दिए गए आँकड़ों पर मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा के साथ समिति ने विस्तार से चर्चा की। चर्चा के उपरांत समिति द्वारा मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए सभी कार्यों के साक्ष्यों का प्रत्यक्ष निरीक्षण भी किया गया। निरीक्षण के लिए मिधानि द्वारा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) से संबंधित दस्तावेजों, राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5, 8, 11 और 12 के अनुपालन, हिंदी में किए जा रहे पत्राचार, राजभाषा

गृह पत्रिका आदि की प्रदर्शनी लगाई गई थी। समिति ने मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों और विशेष उपलब्धियों के लिए मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की सराहना की और इसमें वृद्धि लाने के सुझाव दिए।





समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

## 'राजभाषा पुरस्कार' से मिधानि सम्मानित



28.10.2022 को बीडीएल, कंचनबाग, हैदराबाद में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद की 56वीं अर्धवार्षिक बैठक में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए मिधानि को राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार बीडीएल के सीएमडी कमोडोर सिद्धार्थ मिश्र के कर कमलों से मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा, महाप्रबंधक (पीएमओ) देबाशीष दत्ता, उप प्रबंधक

(हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार), अवर कार्यपालक (हिंदी अनुभाग) डी. वी. रत्नाकुमारी और वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक रत्नेश भट्ट ने पुरस्कार ग्रहण किया।



इस अवसर पर नराकास (उ.) द्वारा आयोजित कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने पर श्री रत्नेश भट्ट, वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक को भी सम्मानित किया गया।

## मिधानि के कर्मचारियों को मिला भाषण प्रतियोगिता में पुरस्कार



दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में मिधानि के कर्मचारियों - श्रीमती गरिमा ओझा, सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा) तथा श्री राजकुमार साहू, तकनीशियन (युटिलिटीज) को क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।





## डीडीपी द्वारा मिधानि का राजभाषाई निरीक्षण



दि. 21.10.2022 को मिश्र धातु निगम लिमिटेड में रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय के दल द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया गया। रक्षा उत्पादन विभाग के राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री मनोज कुमार चौधरी और वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री कालेय खान ने मिधानि में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित निरीक्षण प्रश्नावली पर पीपीटी प्रस्तुतीकरण के दौरान दिए गए आँकड़ों पर मिधानि के उपस्थित अधिकारियों के साथ विस्तार से चर्चा की।

चर्चा के उपरांत निरीक्षण दल द्वारा मिधानि के विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित फाइलों का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया गया। उन्होंने राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) और राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5, 8, 11 और 12 के अनुपालन संबंधी दस्तावेज, हिंदी में किए जा रहे पत्राचार आदि का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। निरीक्षण दल ने मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों और विशेष उपलब्धियों के लिए मिधानि प्रबंधन की प्रशंसा की।

### **-: सुविचार :-**

जिंदगी में कभी ऐसा महसूस हो कि सब कुछ खो गया है, तो याद रखें पेड़ हर साल अपने सभी पत्ते खो देता है, फिर भी, पूरी मजबूती के साथ खड़ा रहता है और अच्छे दिनों का इंतजार करता है।  
और, अच्छे दिन आते भी हैं।

## हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

22.11.2022 को आयोजित कार्यशाला में हि. शि. यो. के डॉ. रवि चंद्र राव, वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक, आरसीआई के डॉ. काजिम अहमद, सहायक निदेशक (रा.भा) और श्री अमित गुप्ता, वैज्ञानिक ई, ने क्रमशः राजभाषा और संप्रेषण, कार्यालयीन कामकाज में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की आवश्यकता विषय पर व्याख्यान दिया।



छह माही अक्टूबर 2022 से मार्च 2023 के दौरान मिधानि द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए तीन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में कुल 43 कर्मचारियों को राजभाषा नीति, प्रशासनिक व तकनीकी शब्दावली, कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन के साथ-साथ विभिन्न तकनीकी विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए।

16.12.2022 को आयोजित कार्यशाला में राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज) की वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी डॉ. श्रीवल्ल्मी ने "सरकारी कामकाज की भाषा : हिंदी" तथा हि. शि. यो. के सहायक निदेशक मु. कमालुद्दीन ने "प्रशासनिक शब्दावली की उत्पत्ति और प्रयोग" तथा विषय पर व्याख्यान दिया।



06.02.2023 को आयोजित कार्यशाला में दिव्या नायर, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, एएसएल, डीआरडीओ ने राजभाषा में काम करें, क्यों और कैसे, मिधानि के भवनीश कुमार सिंह ने ग्रीन स्टील निर्माण में CO2 उत्सर्जन को कम करने के लिए एक दृष्टिकोण और आईओसीएल के सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना) एम आर अयंगर ने हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान और व्याकरण विषय पर व्याख्यान दिया।





डॉ. संजय कुमार झा, सीएमडी, मिथानि

डॉ. संजय कुमार झा, होमी भाभा राष्ट्रीय संस्थान से इंजीनियरिंग में पीएचडी हैं। आपने परमाणु ऊर्जा में "डिफिकल्ट टू हॉट वर्क" अलॉय जैसे विभिन्न ग्रेडों से संबद्ध परमाणु सामग्रियों के प्रसंस्करण में कई तकनीकी नवाचार किए हैं। आपको धातु कर्म के क्षेत्र में लगभग 35 वर्षों का सुदीर्घ अनुभव है।

हम सभी भारतीयों के लिए यह गर्व का विषय है कि इस वर्ष हम अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। गर्व का विषय तो है ही किंतु उससे भी अधिक चिंतन-मनन का विषय भी है। भारत नित नए आयाम तय कर रहा है। नए रूप में समर्थ, सशक्त होकर आत्मनिर्भरता की ओर अपने कदम बढ़ा रहा है। वैश्विक पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करने के सभी प्रयासों में सफल होने की नई ऊर्जा हासिल कर रहा है।

हाल ही में नए भारत के संकल्पों और विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने की एक बड़ी मिसाल हमारे सामने घटित हुई। जन जातीय समुदाय की एक महिला भारत की सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन हुई। महामहिम राष्ट्रपति के पद पर आसीन होकर परमादरणीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मु भारत में स्त्री सशक्तिकरण ही नहीं बल्कि स्त्री शक्ति के नेतृत्व में विकास की सोच का परिचायक बनी हैं। नए रूप में ढल रहे भारत में बदलाव की नई लहर दिखाई दे रही है। इस अवसर पर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के दायित्व की ओर भी देखना जरूरी है। राजभाषा नीति, संकल्प, राष्ट्रपति आदेश, राजभाषा अधिनियम व नियम बने हुए हैं और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से हर वर्ष जारी होने वाले वार्षिक कार्यक्रम भी हमारे सामने हैं। इन सब के बावजूद, यदि यह कहा जाए कि राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन उम्मीद के

अनुरूप नहीं है, तो गलत नहीं होना चाहिए। वैश्विक पटल पर अपना परचम लहराने के लिए तैयार भारत में राजभाषा के रूप में हिंदी को अधिक रणनीतिक रूप से क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। इसके लिए शीर्षस्थ अधिकारियों, वैज्ञानिकों, अभियंताओं, प्रशासनिक कर्मचारियों आदि से लेकर सामान्य जनता तक को अपने दायित्व का बोध होना बेहद जरूरी है। संविधान के अनुच्छेद 351 और राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार भले ही राजभाषा के प्रचार-प्रसार व कार्यान्वयन का दायित्व क्रमशः केंद्र सरकार तथा कार्यालय प्रधान पर है। किंतु देश की जनता सरकार से और कार्यालय के कर्मचारी कार्यालय प्रधान से अलग नहीं हैं। जनता ने सरकार बनाई है। कर्मचारी अपने कार्यक्षेत्र में कार्यालय प्रधान के प्रतिनिधि हैं। रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसी दास कहते हैं -

**कीरति भनिति भूति भलि सोई।  
सुरसरि सम सब कहं हित होई।**

यहाँ उन्होंने रामचंद्र जी की कीर्ति की प्रशंसा करते हुए अपनी कविता की न्यूनता की ओर इशारा किया है। इस कथन को हम राजभाषा कार्यान्वयन के साथ जोड़कर देखें तो हमें यह अहसास होगा कि भारत की कीर्ति तो रामचंद्र जी की तरह प्रशंसनीय है, वह बढ़ भी रही है किंतु राजभाषा के रूप में हिंदी की कीर्ति होना अभी बाकी है।

मैंने अपनी आरंभिक शिक्षा से बारहवीं तक की पढ़ाई हिंदी माध्यम से की है। लेकिन उच्च शिक्षा के लिए मुझे अंग्रेजी को शिक्षा के माध्यम के रूप में चुनना पड़ा और क्रमेण आगे की पढ़ाई भी अंग्रेजी में ही करनी पड़ी। आशा है कि नई शिक्षा नीति 2020 के



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

सुचारु रूप से लागू होने पर भारत में यह स्थिति बदलेगी। हिंदी व मातृभाषा में सहजता के साथ अभिव्यक्ति का विकास होगा। तब तक हमें हिंदी के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करते रहना होगा। यह अनिवार्य है। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए हमने अब तक अपनी रचनात्मक भूमिका को जिस श्रद्धा के साथ निभाया है, उसमें कमी नहीं करनी होगी। अन्यथा अब तक का सफर अधूरा रह जाएगा।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को  
काम में लाना देश की  
एकता और उन्नति के लिए  
आवश्यक है।

-: महात्मा गांधी

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत  
अनिवार्यतः द्विभाषा में जारी किए जाने वाले दस्तावेज

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के प्रावधान के तहत निम्नलिखित दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाएंगे: -

- (1) संकल्प (2) सामान्य आदेश (3) नियम (4) अधिसूचनाएं (5) प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट (6) प्रेस विज्ञप्ति (7) प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट और आधिकारिक दस्तावेज जिन्हें एक सदन या संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखा जाना है (8) अनुबंध (9) समझौता (10) लाइसेंस (11) परमिट (12) निविदा नोटिस (13) निविदा फॉर्म (14) अखिल भारतीय स्तर के विज्ञापन

**ध्यान दें**

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अनुसार इन दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति यह सुनिश्चित करेंगे कि ये दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी में जारी किए जाते हैं। यदि कोई अधिकारी या कर्मचारी जानबूझकर राजभाषा के प्रावधानों का उल्लंघन करता है, तो मामले से संबंधित नियमों और आदेशों के उल्लंघन के आधार पर कार्रवाई की जा सकती है।

12 वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा फिजी सरकार के सहयोग से 15 से 17 फरवरी, 2023 तक फिजी देश के नांदी शहर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का मुख्य विषय "हिंदी- पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक" था। सम्मेलन का आयोजन स्थल देनाराउ आईलैंड कन्वेंशन सेंटर नांदी, फिजी में था। इस संदर्भ में दूरदर्शन ने विशेष कार्यक्रम आयोजित किया था।

देखने के लिए यहाँ क्लिक करें : <https://www.youtube.com/watch?v=aqbdBzX2DLw>



गरिमा ओझा, सहायक प्रबंधक (वि. एवं लेखा)

गरिमा ओझा सीए इंटरमीडिएट में भारतीय रैंक - 18 प्राप्त सनधि लेखाकार हैं। आप हिंदी कविता, कहानी और निबंध लेखन में सक्रिय हैं। आपको दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद की भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जा हो चुका है।

इस विषय की शुरुआत करने से पहले आप सभी से एक छोटा सा प्रश्न हैं। आप सभी लोगों में से सपने कितने लोग देखते हैं ? सोते हुए या जागते हुए किसी भी रूप में। जहाँ तक मेरा मानना है, अमूमन सभी लोग सपने देखते हैं, और उन्हें पूरा करने की चाह का भी रखते हैं, परंतु सपने देखने से लेकर उन्हें पूरा करने तक का जो सफ़र होता है, वह बहुत मुश्किल एवं कठिनाइयों से भरा होता है। शायद इस बात से आप सभी लोग भली-भांति परिचित होंगे।

तो आज हम जिस विषय के संदर्भ में बात करने जा रहे हैं वह भी एक सपने से जुड़ा हुआ है। जी हाँ, एक सपना जो हिंदी को सम्पूर्ण राष्ट्र में लागू करने का, हिंदी का राज से राष्ट्र भाषा बनाने का, ये सपना देखा था हमारे संविधान निर्माताओं ने, तो चलिए जानते हैं इस सपने का सफ़र कैसा रहा।

ये बात है वर्ष 1949 की जब हमारा संविधान तैयार किया जा रहा था। 14 सितंबर, 1949 को महात्मा गांधी एवं अन्य महान नेताओं के मार्गदर्शन में हिंदी को राजभाषा के रूप में चुना गया। राजभाषा अर्थात् 'संघ के सरकारी काम काज की भाषा'। ये वह दौर था जब हमारा देश अंग्रेजों के शासन से मुक्त हुआ ही था। इसीलिए उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, यह तय किया गया की प्रारंभिक 15 वर्षों के लिए हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को भी सरकारी कामकाज हेतु प्रयोग में लाया जायेगा। इसके पीछे की

धारणा यह थी कि इन 15 वर्षों में शासन-प्रशासन के समस्त कामकाज हिंदी में होने लगेंगे, लेकिन कुछ अवांछित कारणों एवं अवरोधों के चलते ऐसा संभव नहीं हो पाया और 15 वर्षों के बाद भी अंग्रेजी निरंतर उपयोग में आ रही है। परन्तु हिंदी के समर्थक भी ऐसे हालात में चुप नहीं बैठे ने वाले थे इसीलिए वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम लाया गया एवं उसके पश्चात 1976 में राजभाषा नियम जारी किए गए जिनका मुख्य लक्ष्य कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अनुपालन सुनिश्चित करना एवं हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना था।

आगे चलकर यही राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 वह मूलभूत आधार शिला बने जिस पर आज हमारे सम्पूर्ण कार्यालयीन कामकाज का ढांचा टिका हुआ है। तो चलिए, विस्तार से जानते हैं कि कार्यालयीन कामकाज में हिंदी की क्या भूमिका है। तो आइये, संक्षेप में पहले उन क्षेत्रों के बारे में जानते हैं जहाँ हिंदी का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाना आवश्यक है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार, कुल 14 दस्तावेज ऐसे बताए गए हैं जिन्हें हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किया जाना अनिवार्य है। ये 14 दस्तावेज निम्नलिखित हैं :-

- 1) संकल्प
- 2) सामान्य आदेश
- 3) नियम
- 4) अधिसूचनाएं
- 5) प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट
- 6) प्रेस विज्ञप्ति
- 7) प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट और आधिकारिक दस्तावेज जिन्हें एक सदन या संसद के दोनों सदनों के



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

- के समक्ष रखा जाना है
- 8) अनुबंध
  - 9) समझौता
  - 10) लाइसेंस
  - 11) परमिट 12) निविदा नोटिस
  - 13) निविदा फॉर्म
  - 14) अखिल भारतीय स्तर के विज्ञापन

राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत भी ऐसे नियम

बताये गए हैं जो हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देते हैं। नियम 5 बताता है कि, हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिया जाना चाहिए। नियम 6 राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुपालन को सुनिश्चित करवाता है। नियम 11 यह बताता है कि, कार्यालय का शीर्ष पत्र, मोहर, लिफाफे, वाहनों पर कंपनी का नाम, नाम पट्ट, फाइल फोल्डर पर विवरण, परिचय पत्र, पहचान पत्र आदि पर विवरण हिंदी-अंग्रेजी में दिया जाना अनिवार्य है।

### मिधानि ने 'बंधन' में तेरह समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर किए हस्ताक्षर



मिधानि ने माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी, माननीय राज्यपाल गुजरात श्री आचार्य देवव्रत जी, रक्षा सचिव डॉ. अजय कुमार, सचिव डीडीआर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ तथा भारत सरकार व गुजरात राज्य सरकार के अन्य प्रमुख अधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में डेफएक्सपो22 में 'बंधन' समारोह में तेरह समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। मिधानि ने ये समझौता ज्ञापन आपसी व्यापार सहयोग के लिए एचएएल (फाउंड्री एंड फोर्ज), आर्मर्ड व्हीकल निगम लिमिटेड (एवीएनएल), यंत्र इंडिया लिमिटेड (वाईआईएल), एडवांस्ड वेपंस इक्विपमेंट इंडिया लिमिटेड (एडब्ल्यूईआईएल), भारतीय वायु सेना, भारत सरकार टकसाल, तमिलनाडु औद्योगिक रक्षा कॉरिडोर (टीआईडीसीओ), कॉरिडोर (यूपीआईडीए), बिट्स, हैदराबाद, कार्बोरेडम यूनिवर्सल लिमिटेड (सीयूएमआई), स्काईरूट एयरोस्पेस, पीटीसी और गैलस टेक्नोलॉजीज के साथ किए गए हैं।



राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु संपूर्ण भारत को तीन क्षेत्रों के अंतर्गत बाँटा गया है क, ख एवं ग क्षेत्र। 'क क्षेत्र' के अंतर्गत वह राज्य आते हैं जिन राज्यों में हिंदी को प्रथम भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। 'ख क्षेत्र' के अंतर्गत वह राज्य आते हैं जहाँ पर हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। अन्य सभी राज्य 'ग क्षेत्र' के अंतर्गत आते हैं। आपकी जानकारी के लिए यह बताना चाहती हूँ कि हमारा जो राज्य है 'तेलंगाना' वह 'ग क्षेत्र' के अंतर्गत आता है और सरकार द्वारा प्रति क्षेत्र के अंतर्गत कार्यरत केंद्र सरकार के कार्यालयों के लिए कुछ वार्षिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं जिन्हें प्राप्त करना इन सभी कार्यालयों के लिए अनिवार्य होता है।

आइये, हम 'ग क्षेत्र' के अंतर्गत आने वाले कार्यालयों के लक्ष्यों पर विचार करते हैं:

'ग क्षेत्र' के लिए हिंदी में पत्राचार का लक्ष्य 55% रखा गया है।

हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में देने का लक्ष्य 100% है।

हिंदी के प्रशिक्षण का लक्ष्य 100% है।

हिंदी में टिप्पणी का लक्ष्य 30% रखा है, इत्यादि।

इसी प्रकार अन्य कई लक्ष्य भी निर्धारित किए गए हैं इन सभी लक्ष्य को प्राप्त करना एवं हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की जवाबदेही कार्यालय प्रधान की होती है। कार्यालय प्रधान द्वारा यह सभी कार्य राजभाषा विभाग के माध्यम से किए जाते हैं। राजभाषा विभाग हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन एवं उसके अनुपालन को भी सुनिश्चित करवाता है। यदि कोई भी कर्मचारी राजभाषा नीति की अवहेलना करता हुआ पाया गया तो उसे दंड देने का अधिकार एवं उसके प्रति

अनुशासनात्मक कार्यवाही करने का अधिकार भी कार्यालय प्रधान के पास ही होता है।

अभी तक हमने यह जाना कि वह कौन-कौन से क्षेत्र होते हैं जहाँ पर हिंदी का उपयोग करना अनिवार्य होता है। आइए, अब चर्चा करते हैं उन क्षेत्रों की जहाँ हिंदी का उपयोग अनिवार्य नहीं है परंतु वैकल्पिक है अर्थात् अंग्रेजी के स्थान पर स्थानीय भाषा या हिंदी का प्रयोग किया जा सकता है।

संविधान के भाग 5, अनुच्छेद 120 के अनुसार संसद में उपयोग होने वाली भाषा हिंदी या अंग्रेजी कोई भी हो सकती है। संविधान के भाग 6, अनुच्छेद 210 के अनुसार विधानमंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा हिंदी, अंग्रेजी या वहां की स्थानीय भाषा हो सकती है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 7 के अनुसार आवेदन एवं अभ्यावेदन की भाषा भी हिंदी हो सकती है। नियम 8 बताता है कि कार्यालय में टिप्पणी के लेखन की भाषा भी हिंदी हो सकती है। संक्षिप्त में कहा जाए तो ये वे क्षेत्र हैं जहाँ पर हिंदी का उपयोग अनिवार्य नहीं है परंतु हम अपनी इच्छा से अंग्रेजी या अन्य किसी भाषा के स्थान पर हिंदी का उपयोग कर सकते हैं।

इसी के साथ यह भी देखा गया है कि हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए कार्यालयों में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जैसे प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत जिनका लक्ष्य कर्मचारियों को हिंदी सिखाना और उन्हें सरकारी कामकाज हिंदी का प्रयोग करने के लिए तैयार करना होता है। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अगर किसी कार्यालय के 80% कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान होता है तो उस कार्यालय का नाम भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है।



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

## "क्वालिटी सर्कल्स" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मिधानि ने 05.11.2022 को अपने 45 कर्मचारियों की एक क्रॉस फंक्शनल टीम के लिए "क्वालिटी सर्कल्स" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। अवसर पर मिधानि के डॉ. एसके झा, सीएमडी, श्री एन गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त) और श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उ. एवं वि.) ने अपने उपस्थिति दर्ज की।



और मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि "मिधानि" ने यह 80% का लक्ष्य 5 जनवरी 2022 को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया है। इसी के साथ हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय स्तर पर एवं केंद्र सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

हिंदी में लेखन को बढ़ावा देने के लिए भी राष्ट्रपति द्वारा 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' दिया जाता है। यह पुरस्कार दो श्रेणियों में दिया जाता है, प्रथम पुस्तक लेखन, एवं द्वितीय तकनीकी लेख के क्षेत्र में। पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार राशि ₹2,00,000 है, एवं लेख है तो यह राशि ₹20,000 है। एक बार फिर से आप सभी को यह जानकर बहुत खुशी होगी कि वर्ष 2021 में यह पुरस्कार मिधानि के राजभाषा अधिकारी श्री बालाजी को प्राप्त हुआ है, उनके द्वारा लिखे गए लेख 'आर्मिंग के उत्पादन में अग्रणी मिधानि' हेतु। एक और महत्वपूर्ण पुरस्कार जो राष्ट्रपति द्वारा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय को दिया जाता है जिसे राजभाषा कीर्ति पुरस्कार कहते हैं।

तो देखिये, हमने यह जाना कि हिंदी कार्यालय में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी केवल

साहित्य और फिल्मों की भाषा नहीं है और ना ही सिर्फ बातचीत का जरिया है, यह तो हमारी आधिकारिक भाषा है।

आज कहीं न कहीं अंग्रेजी के बढ़ते वर्चस्व के कारण हिंदी की प्रगति उतनी संतोषजनक नहीं हुई है जितनी हमारे संविधान निर्माताओं ने अपेक्षा की थी। परंतु अभी भी देर नहीं हुई है, हम आज भी जो हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने का सपना हमारे संविधान निर्माताओं ने देखा था उसे साकार कर सकते हैं। बस जरूरत है तो आप सभी के साथ की, नव युवाओं की भागीदारी की और साथ ही साथ उन क्षेत्रों में हिंदी का उपयोग बढ़ाने की, जहाँ पर या तो हिंदी का उपयोग करने का कोई प्रावधान नहीं है या हिंदी का प्रयोग वैकल्पिक है। मैं आशा करती हूँ कि मेरा संदेश आप सभी तक पहुंचा होगा और आप सभी इसे अपनी जिंदगी में अमल भी करेंगे।

अंत में निम्नलिखित पंक्तियों के साथ इस लेख को विराम देना चाहूंगी -

'सम्मान जो खोया है, / हमें उसको वापस लौटाना होगा। / अस्तित्व न खो दे ये अपना,  
हमें हिंदी को आगे बढ़ाना होगा।  
जय हिंदी.... जय भारत....



## "भ्रष्टाचार मुक्त भारत विकसित भारत" के लिए डेटा क्रांति



के. लक्ष्मी प्रसन्ना ईआरपी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की विशेषज्ञ हैं। आप कंप्यूटर साइंस में स्नातक हैं। आपने विभिन्न मंचों से कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर व्याख्यान दिया है। आप मिथानि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी सभी गतिविधियों की जिम्मेदारी वहन करती हैं।

के. लक्ष्मी प्रसन्ना, उ.प्र. (आईटी)

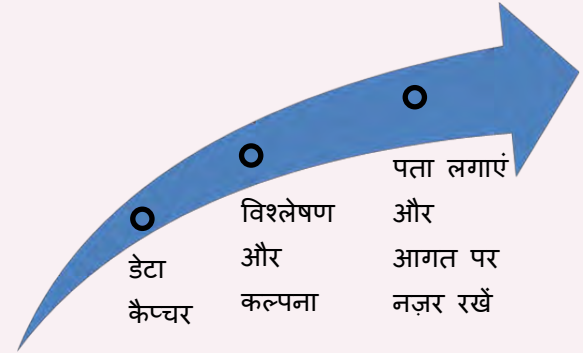
प्रौद्योगिकी में सफलता से समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण से संबंधित बृहत मात्रा में डेटा तक पहुंच अभूतपूर्व व त्वरित संभव हो पाया है। इसे बनाए रखने के लिए सरकारें, संगठन और नागरिक, प्रौद्योगिकी का स्वागत कर रहे हैं और डिजिटलीकरण को अपना सहयोगी बना रहे हैं। 'डेटा क्रांति', जिसमें डेटा कैप्चरिंग और तकनीकी नवाचार दोनों की समान संबद्धता होती है, भ्रष्टाचार सहित समाज के प्रमुख मुद्दों से निपटने की क्षमता रखती है।

भ्रष्टाचार हमारे देश के सभी नागरिकों के लिए कोई नया शब्द नहीं है। वास्तव में, यह एक आम शब्द है और हर कोई इस शब्द से बचपन से ही परिचित है। मुझे लगता है कि भ्रष्टाचार पर निबंध लिखते-लिखते हमारे बाल पक जाएंगे। काइज़न प्रणाली से भ्रष्टाचार को धीरे-धीरे, एक-एक करके मिटाया जा सकता है। भ्रष्टाचार से मुक्त होना एक रात का काम नहीं है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के करप्शन परसेप्शन इंडेक्स (CPI), 2021 में भारत 180 देशों में 85वें स्थान पर रहा है।

सूचनाएँ लोकतंत्र के लिए न केवल उपयोगी आधार हैं बल्कि उन तक पहुंच और पारदर्शिता, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में प्रमुख उपकरण हो सकते हैं। इससे सरकार और बाजार दोनों के लिए भी खुलापन तथा एक समान अवसर पैदा किए जा सकते हैं। इन

दोनों उपकरणों के समावेशी उपयोग से भ्रष्टाचार का पता लगाने, रोकथाम और विश्लेषण के क्रांतिकारी तरीकों के माध्यम से भ्रष्टाचार विरोधी एजेंडे को प्रसारित किया जा सकता है।

तीन प्रौद्योगिकियाँ भ्रष्टाचार का पता लगाने, रोकथाम और विश्लेषण में मदद करती हैं:



### 1. बिक डेटा:

प्रक्रियाओं में स्वचालन, सटीकता और आवृत्ति को बढ़ाकर संगठनों में पारदर्शिता बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। धोखाधड़ी व मिलीभगत का पता लगाने और उसे रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय संगठन बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। ये नवीन सॉफ्टवेयर विकसित कर रहे हैं। संगठनों को चाहिए कि वे लोगों, प्रक्रियाओं, खरीद और भुगतान जैसे वित्तीय लेन-देन से संबंधित सभी प्रकार के डेटा को अपने नियंत्रण में संग्रहित करें। अधिक सुलभ और बेहतर गुणवत्ता वाले डेटा से बेहतर नीतिगत निर्णय तथा अधिक जवाबदेही प्राप्त होगी।

धोखाधड़ी विश्लेषण अब कराधान और स्वास्थ्य सेवा सहित क्षेत्रों में संदिग्ध लेनदेन के पैटर्न का पता लगाने में सक्षम हैं और रीयल-टाइम पहचान के साथ, एजेंसियां तुरंत धोखाधड़ी का पता लगाने, रोकने और उसका समाधान करने में सक्षम हो रही हैं।



## 2. डेटा माइनिंग:

सार्वजनिक खरीद में, डेटा माइनिंग का उपयोग ऑडिटिंग के लिए किया जा रहा है ताकि सरकार द्वारा कराई जा रही बोली पर निगरानी रखी जा सके। इससे संदिग्ध व्यक्तियों, मिलीभगत के पैटर्न और गलत सूचना की पहचान की जा रही है। इसका उपयोग डेटा विजुअलाइज़ेशन के माध्यम से भुगतान या लेनदेन में 'भ्रष्ट मंशा' की पहचान करने के लिए भी किया जा रहा है। (उदाहरण के लिए जीतने वाली बोली के लिए कोई प्रतिस्पर्धा नहीं, या एक ही कंपनी द्वारा बार-बार बोलियाँ जीती गई)।

भ्रष्टाचार-रोधी सॉफ्टवेयर उपकरण का विशेष रूप से धोखाधड़ी का पता लगाने और उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए डिज़ाइन किए जा रहे हैं, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके डेटा सेट और प्रशासनिक प्रक्रियाओं का "बौद्धिक खनन" शामिल है। सरकारों के ई-गवर्नेंस और ई-प्रोक्योरमेंट प्रथाओं में इन उपकरणों के प्रभावी एकीकरण से न केवल निर्णय लेने में वृद्धि होगी बल्कि प्रक्रियाओं के सरलीकरण के माध्यम से अधिक पारदर्शिता भी आएगी।

## 3. मोबाइल एप्लिकेशन:

डेटा का उपयोग करने तथा तेजी से अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए मोबाइल प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोगों का उपयोग किया जा रहा है। विकासशील देशों में इस तकनीक का उपयोग दूरस्थ क्षेत्रों में नागरिकों को सशक्त बनाने और सूचनाओं को अधिक सुलभ बनाने के लिए किया जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि इस सफलतम तकनीक का उपयोग भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में नहीं किया जा सकता। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के उदाहरणों में विश्व बैंक

के प्रयासों को देखा जा सकता है। इस बैंक ने भ्रष्टाचार का पता लगाने और उसे रोकने के लिए 'मैने रिश्वत दी' जैसे एप्लिकेशन और वेबसाइटों का निर्माण किया। यह प्रयास अन्यों को भी अपने स्वयं का संस्करण बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। 'इंटेग्रिटी' ऐप का उद्देश्य नागरिकों को विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं तक पहुंच प्रदान करना और धोखाधड़ी व भ्रष्टाचार से संबंधित संदिग्ध गतिविधियों पर तुरंत रिपोर्ट करने का अवसर देता है। ऐप के माध्यम से, उपयोगकर्ता सीधे बैंक-वित्तपोषित परियोजनाओं से संबंधित जानकारी भेज सकते हैं, उदाहरण के लिए, आधे-अधूरे निर्मित स्कूल की तस्वीरें या रिश्वत की रिकॉर्डिंग आदि।

"पब्लिश वाट यू पे" जैसा केंद्रीकृत मोबाइल एप्लिकेशन किसी भी संगठन या सरकारी संस्थान में दैनिक जीवन में लेन-देन के प्रत्येक क्षण के भुगतान को पारदर्शिता प्रदान कर सकता है।

गूगल, एमज़ॉन, माइक्रोसॉफ्ट आदि जैसे तकनीकी दिग्गजों द्वारा डेटा प्रबंधन और भंडारण सुविधाएं (क्लाउड) तेजी से बढ़ाई जा रही हैं। ये क्षमताएं डेटा क्रांति को क्रियान्वित करने में काफी उपयोगी हो सकती हैं।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि भारत देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रत्येक नागरिक, संगठन और सरकार को प्रौद्योगिकियों को अपनाना चाहिए और भारत को "एक विकसित राष्ट्र" बनाने के लिए डेटा क्रांति का हिस्सा बनना चाहिए।

## रेलवे एक्सल के निर्माण के लिए विकास और प्रक्रिया प्रवाह



भवनीश कुमार सिंह, उ.प्र. (एचटी)

भवनीश कुमार सिंह एनआईटी जयपुर से मेटलर्जी व मटेरियल इंजीनियरिंग में बीटेक और आईआईटी, मद्रास से मटेरियल इंजीनियरिंग में एम एस हैं। आप आईआईएम हैदराबाद चाप्टर के कार्यकारी सदस्य हैं। राष्ट्रीय - अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विविध तकनीकी विषयों पर आलेख प्रस्तुत कर चुके हैं।

### अवलोकन

तेजी से शहरीकरण और मध्यम वर्ग की बढ़ती गतिशीलता के परिणामस्वरूप रेलवे नेटवर्क दुनिया भर में तेजी से विकसित हुआ है। हमारा देश भारत भी इससे अछूता नहीं है। भारत में रेल और शहरी विकास मंत्रालय ने स्मार्ट सिटी पहल शुरू की है। कई अन्य देश भी बड़े पैमाने पर सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों को सक्रिय रूप से लागू करने के लिए खर्च कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, तेज़ परिवहन के लिए हाई-स्पीड ट्रेनें। नतीजतन, बढ़ते रेल बुनियादी ढांचे के लिए रेल व्हील और एक्सल उद्योगों के विस्तार की आवश्यकता है। आईईए के अनुसार, 25 से अधिक देशों ने 45,000 किलोमीटर से अधिक ट्रैक वाले हाई स्पीड रेल नेटवर्क का निर्माण किया है। वर्तमान में चीन के पास दुनिया की ट्रैक लंबाई का 60% हिस्सा मौजूद है। चीन ने 2025 तक 38,000 किलोमीटर को परिचालित करने का लक्ष्य रखा है। कंपनी 'पर्सिस्टेंट मार्केट रिसर्च' की रिपोर्ट के अनुसार, नेट जीरो परिदृश्य के अनुसार, 2030 तक हाई स्पीड रेल गतिविधियों में 60% की वृद्धि होने वाली है।

अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, भारत की रेलवे प्रणाली देश के विकास के लिए आवश्यक रही है। लोगों और सामान को अपने विस्तृत भूभाग के हिस्सों में ले जाने, बाजारों को एकीकृत करने और समुदायों

को जोड़ने के लिए रेलवे प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। आज, भारत की पारंपरिक रेल प्रणाली की कुल लंबाई 68000 किलोमीटर है, जो यात्री और माल परिवहन के काम आती है। भारत के दस शहरों में मेट्रो प्रणालियाँ स्थापित हैं, जिनमें लगभग 515 किमी का ट्रैक परिचालन में है। इसके अलावा 620 किमी के ट्रैक निर्माणाधीन है। आने वाले वर्षों में, 600 किलोमीटर नई मेट्रो लाइनों की योजना बनाई गई है। सात अतिरिक्त हाई-स्पीड लाइनों पर विचार किया जा रहा है। ये लाइनें स्वर्णिम चतुर्भुज का निर्माण करेगी जो चार शहरों (मुंबई, दिल्ली, चेन्नई और कोलकाता) के साथ-साथ अन्य मध्यवर्ती शहरों को भी जोड़ेंगी। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत का बाजार 2023 के अंत तक 188.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर के राजस्व को पार कर जाएगा।

सॉलिड एक्सल का उपयोग मालगाड़ी, मेन लाइन ट्रेन और मेट्रो में किया जाता है क्योंकि ठोस एक्सल में उच्च भार का सामना करने के गुण होते हैं। पारंपरिक ट्रेन या रेल में सॉलिड एक्सल लोकप्रिय हैं लेकिन भविष्य में, व्हील एवं एक्सल बाजार में हॉलो एक्सल की रेल की मौजूदगी दर्ज होगी जिससे उसकी माँग बढ़ेगी। अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि उत्पाद के प्रकार के अनुसार, सॉलिड एक्सल सेगमेंट 2023 में वैल्यू शेयर 67.3% तक बनाए रखेगा।

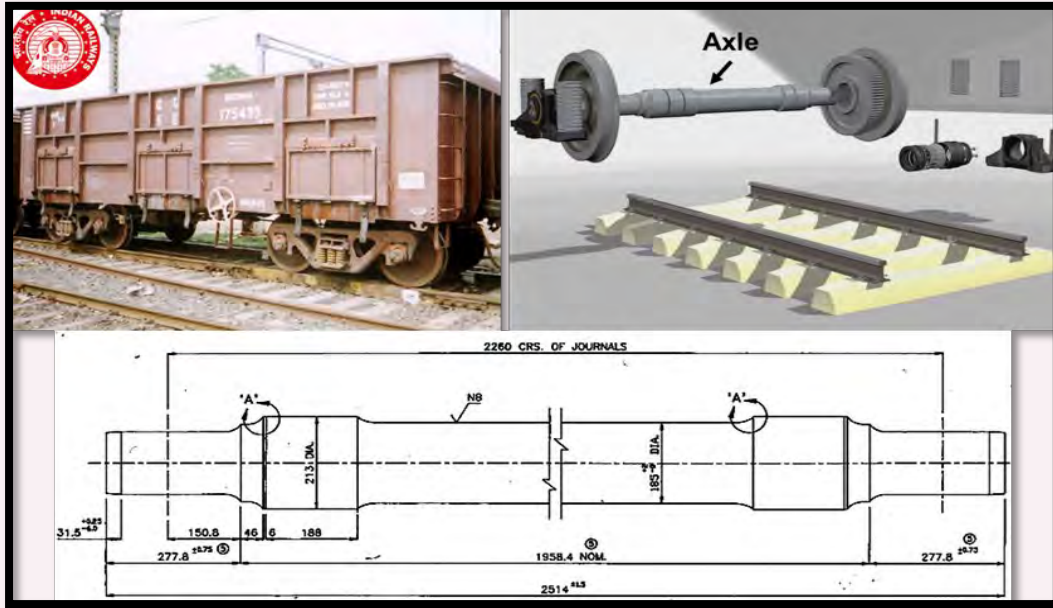
### परिचय

मिधानि ने आईसीएफ चेन्नई ('वंदे भारत कोच') के लिए 400 एलएचबी एक्सल के विकास क्रम को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। एलएचबी एक्सल के सफल विकास और आपूर्ति के आधार पर, रेलवे बोर्ड ने मिधानि की निर्माण प्रक्रिया और तकनीकी



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

चित्र 1. BOX'N वैगन, एक्सल असेंबली (प्रतिनिधि छवि), BOX'N एक्सल ड्राइंग



विशेषज्ञता को मान्यता दी है और उसमें विश्वास दिखाया है।

"आत्मनिर्भर भारत" के तहत विभिन्न रेलवे उत्पादों के स्वदेशीकरण में योगदान को प्रोत्साहित करने के लिए, मिधानि को रेलवे बोर्ड, दिल्ली (माल प्राप्त कर्ता, रेल व्हील फैक्ट्री (RWF), बैंगलुरु) से 1000 BOX'N एक्सल को विकसित करने के आदेश प्राप्त हुए हैं। इसी क्रम में कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (कॉनकोर), बिहार से 540 BLCS एक्सल के आदेश प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त संभावित व्यावसायिक क्षमता वाले विभिन्न प्रकार के एक्सल के लिए पूछताछ की प्रक्रिया जारी है। वर्ष भर में 50000 एक्सल से अधिक के आदेश प्राप्त होने की संभावना है।

### विनिर्माण

इन एक्सलों का निर्माण मिधानि की सबसे बड़ी मेल्टिंग सुविधा यानी 20 टन क्षमता की इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस (ईएएफ) में स्टील को पिघलाकर और नालीदार आकार में 5 टन मोल्ड्स (4 नग) में बाटम पुअरिंग से किया जाता है। हानिकारक गैसों को खत्म करने और न्यूनतम समावेश/कमियों के साथ बेहतरीन कास्टिंग प्राप्त करने के लिए पिघले हुए स्टील को कैल्शियम के साथ उपचारित किया जाता है। आवश्यक यांत्रिक गुणों को प्राप्त करने के लिए पिघलन के दौरान स्टील की रासायनिक संरचना पर ध्यान दिया जाता है।

तालिका 1. माइक्रो अलॉय स्टील की रासायनिक संरचना (MDN EN8)

तत्व	C	S	P	Si	Mn	Cr	Ni	V	Mo	Cu	S+P	N	H	Fe
स्वीकार्य सीमा	0.37 max	0.04 max	0.04 max	0.15 - 0.46	1.12 max	0.3 max	0.3 max	0.05 max	0.05 max	0.3 max	0.07 max	70 ppm max	3 ppm max	Bal

आवश्यक यांत्रिक गुणों को प्राप्त करने के लिए कार्बन समतुल्य (सीई) 0.52 से 0.56 के बीच बनाए रखा जाता है। कार्बन समतुल्य का सूत्र इस प्रकार है-

$$CE = C + \frac{Mn}{6} + \frac{Cr+Mo+V}{5} + \frac{Cu+Ni}{15} \quad \text{सभी तत्व भार \% में (all elements in wt\%)}$$

इसके बाद 6000 टन क्षमता वाले हाइड्रोलिक फोर्जिंग प्रेस में कास्ट बिलेट को मध्यवर्ती आकार में फोर्ज किया जाता है और इसके बाद 1500 टन क्षमता वाले हाइड्रोलिक फोर्जिंग प्रेस में स्टेप फोर्जिंग की जाती है। एक्सल निर्माण की प्रक्रिया प्रवाह चित्र 2 में दर्शाया गया है। फोर्जड एक्सलों को सामान्य उपचार के लिए ऊष्मा उपचार के लिए भेजा जाता है। तालिका 2 में दर्शाई गई विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक्सल पर दो प्रकार की ऊष्मा उपचार स्थितियाँ लागू की जा सकती हैं।

विद्युत भट्टी में एक्सल को गर्म करके सामान्य उपचार किया जाता है।

पूर्ण ऑस्टेनाइट चरण प्राप्त करने के एक्सल को ऑस्टेनाइटाइजिंग तापमान (Ac3) से ऊपर गर्म किया जाता है, इस मामले में 850°C के बाद एयर कूलिंग की जाती है। इस ऊष्मा उपचार से एक्सल को आवश्यक यांत्रिक गुण और एकरूपता प्रदान किया जाता है। तत्पश्चात परीक्षण कूपन को बैंड सॉ कटिंग मशीन द्वारा काटा जाता है और यांत्रिक परीक्षण के लिए कार्यशाला में भेजा जाता है।

## तालिका 2. आपूर्ति की स्थिति और संबंधित यांत्रिक गुण

मेकानिकल गुण	मानकीकरण	शमन & निर्दिष्ट स्वभाव
परम तन्य शक्ति (एमपीए)	550-650	550-700
नम्य होने की क्षमता 0.2% तन्य शक्ति (एमपीए)	320	350
वृद्धि (%), GL=5.65 □A	22	24
प्रभाव यू-नॉच @20°C (J)	25	40

इसके बाद, अंतिम उत्पाद प्राप्त करने के लिए एक्सल को मशीनिंग के लिए भेजा जाता है। अंतिम उत्पाद का उपयोग सीधे रेलवे द्वारा किया जाता है। आरडीएसओ (अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन) निरीक्षकों द्वारा देखे गए मशीनी एक्सल कठोर गुणवत्ता जांच से गुजरते हैं, उदाहरण के लिए आंतरिक दोषों का पता लगाने के लिए अल्ट्रासोनिक निरीक्षण (यूटी), सतह / उप सतह दोषों के लिए चुंबकीय कण निरीक्षण (एमपीआई) जिनका खुली आखों द्वारा पता लगाना मुश्किल होता है। अंत में, रेलवे की ड्राइंग/आवश्यकता के अनुसार आयामी जांच की जाती है। परिवहन के दौरान किसी भी भौतिक क्षति से बचने के लिए एक्सल की पैकेजिंग भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है और इसके लिए विशेष पैकेजिंग सामग्री की आवश्यकता होती है।

## चित्र 2. रेलवे एक्सल के निर्माण की प्रक्रिया प्रवाह चार्ट

### प्रक्रिया प्रवाह



### मेल्टिंग, फोर्जिंग और ऊष्मा उपचार



### मशीनिंग



### गुणवत्ता निरीक्षण, पैकेजिंग और प्रेषण

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मिधानि द्वारा उत्पादन और व्यापार क्षमताओं का विस्तार सफलतापूर्वक किया जा रहा है। मिधानि ने अपनी स्थापना के समय से ही देश को आत्मनिर्भर बनाने में अथक परिश्रम किया है। मिधानि ने रक्षा, ऊर्जा और

अंतरिक्ष के क्षेत्र के आवश्यक विशेष धातुओं का विनिर्माण कर अपनी पहचान बनाई है। वर्तमान में अपने पंख पसारते हुए नए क्षितिज नापने की तैयारी की जा रही है। इसका ज्वलंत उदाहरण है रेलवे के लिए एक्सल की आपूर्ति।

## प्रमोशन का चक्कर, जब छाता है



विजय कुमार चौधरी मिधानि में तकनीशियन हैं। आपको कविता, कहानी, नाटक लेखन में रुची है। आपने नई दिल्ली प्रवास के दौरान विभिन्न नाटक में अभिनय किया है। फेसबुक और अपने ब्लाग 'मजदूर की मजबूरी' पर निरंतर अपने विचार हिंदी में साझा करते रहते हैं। विजय कुमार चौधरी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध हैं।

विजय कुमार चौधरी, क्रेन प्रचालक, मेल्ट शॉप-IV

प्रमोशन का चक्कर, जब छाता है।  
दिमाग लोमड़ी सा बन जाता है।।  
जुलूस कहानी के दरोगा वीर बल सिंह  
याद आ जाते हैं।  
जब कनिष्ठ अधिकारी, वरिष्ठ अधिकारी को  
बेहतर काम दिखाते हैं।।  
मानवाधिकारों का हनन, अक्सर हमने  
ज्यादातर देखा है।  
फेक एनकाउंटर करना भी प्रमोशन की सफल तम रेखा  
है।।  
सबसे बेहतर मैं ही हूँ, ये खुद को बतलाते हैं।  
कंपनी के लिए ही मरता हूँ, ये स्वयं को दर्शाते हैं।।  
बॉस को खुशामद करना है कैसे दिमाग में सिर्फ आता है।  
प्रमोशन का चक्कर, जब छाता है।  
दिमाग लोमड़ी सा बन जाता है।।  
कुशल कारीगर का काम, अर्ध कुशल से करवाते हैं।  
बॉस को सूचना देते हैं, हम कंपनी का पैसा बचाते हैं।।  
उत्पादन हो ज्यादा, अपनी पाली में दिखलाते है।  
गुणवत्ता जाए भाड़ में, खुद बेहतर बन जाते हैं।।  
कहें चौधरी प्रमोशन हो सिर्फ उनका,  
जिनका कार्य उत्पादकता,  
गुणवत्ता और मानवता को बढ़ाता है।



वरना,  
प्रमोशन का चक्कर, जब छाता है।  
दिमाग लोमड़ी सा बन जाता है।।

## शिखर और नींव



दीपाली निगुडकर की मातृभाषा मराठी है। आप मराठी के साथ-साथ हिंदी में कविता लेखन करती हैं। हिंदी अध्यापन के द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हैं। तेलंगाना महिला काव्य मंच की सदस्य हैं। इस मंच के साझा काव्य संग्रह 'नया आसमान-नई उड़ान' में आपकी कविताएँ संकलित हैं। डेली हिंदी मिलाप द्वारा आयोजित युद्धवीर प्रतियोगिता में आपके संस्मरण को पुरस्कार प्राप्त हुआ।

दीपाली निगुडकर, अध्यापिका, बीपीडीएवी स्कूल, मिधानि  
पत्नी रोहित निगुडकर, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

एक महल का उच्च शिखर था,  
खड़ा था पूरी शान से।  
उसी महल की दृढ़ नींव को,  
देखे दर्प भरी मुस्कान से।।

नींव! देख तू मेरा वैभव,  
मुझसे महल की शान है।  
तू मिट्टी में सराबोर सी,  
जैसे चाँद में दाग है।।

बड़े अदब से नींव मुसकाई,  
बोली तू तो नादान है।  
नींव अगर कमजोर हुई तो,  
होते महल वीरान हैं।।

अगर जो तन कर शिखर खड़ा है,  
उसमें किसी नींव का हाथ है।  
तेरी कोई बिसात नहीं है,  
मुझसे तेरी पहचान है।।



सभी जो शिखर बनना चाहें,  
तो कोई शिखर न बन पाएगा।  
किसी को नींव बनना होगा,  
तभी शिखर कोई बन पाएगा।।

इतना सुन कर शिखर का घमंड,  
नींव के कदमों में आया,  
शिखर बोला मैं खुशकिस्मत हूँ,  
जो मैंने तुम सी नींव को पाया।।





समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

## 'तुम' से 'हम' होना



अनिल कुमार छीपा पेशे से इंजीनियर हैं। आपने 21 वर्ष की आयु से लेखन करना शुरू किया। आप मूलतः प्रेम कहानियाँ एवं कविताएँ लिखना पसंद करते हैं। साथ ही, सामाजिक विसंगतियों के निवारण संबंधी विषयों पर भी अपनी कलम चलाते हैं। लेखन के साथ-साथ, चित्रकारी करना एवं पुस्तकें पढ़ना भी आपकी रुचि में शामिल हैं।

अनिल कुमार छीपा, प्रबंधन प्रशिक्षु, मेकानिकल

मुझे पसंद हैं... तुम्हारी आँखें,  
मुझे पसंद है... उन आँखों में मेरा होना ।  
मुझे पसंद है... तुम्हारा प्यार से बात करना,  
मुझे पसंद है... उन बातों में, मेरे लिए प्यार होना ।  
मुझे पसंद है... तुम्हारा बेफिक्र होना,  
मुझे पसंद है... उस बेफिक्री का कारण, मेरा होना ।  
मुझे पसंद है... छोटी चीजों से तुम्हारा डर जाना,  
मुझे पसंद है... उस डर में तेरा, मेरा हाथ थाम लेना ।



मुझे पसंद है... तुम्हारा वो खुल के हंसना,  
मुझे पसंद है... उस हंसी का कारण, मेरा होना ।  
मुझे पसंद है... तुम्हारे होंठों पर मुस्कान का आना,  
मुझे पसंद है... उस मुस्कान का कारण, मेरा होना ।  
मुझे पसंद है... तुम्हारा खयालों में रहना,  
मुझे पसंद है... उन खयालों में मेरा होना।  
मुझे पसंद है... तुम्हारा कविताएं लिखना,  
मुझे पसंद है... उन कविताओं में, मेरा जिक्र होना।  
मुझे पसंद है... मेरे साथ, तुम्हारा 'तुम' होना,  
मुझे पसंद है... मेरे साथ, 'तुम' से 'हम' होना।

## मिधानि ने 5 नियुक्ति प्रस्ताव जारी किए



मिशन मोड भर्ती के तहत कनिष्ठ सहायकों के पद के लिए माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 22 अक्टूबर 2022 को पूरे भारत में 50 स्थानों पर आयोजित मिशन मोड भर्ती, "रोज़गार मेला" पर वीडियो कॉन्फरेंस के माध्यम से एक कार्यक्रम शुरू किया। हैदराबाद के आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र के पर्यटन, संस्कृति और विकास मंत्री श्री जी किशन रेड्डी थे। मिधानि ने रेल कलारंग, सिकंदराबाद में भाग लिया और मिशन मोड भर्ती के तहत कनिष्ठ सहायकों के पद के लिए कुल 5 नियुक्ति प्रस्ताव जारी किए (3 प्रत्यक्ष रूप से कार्यक्रम में और 2 ईमेल के माध्यम से)। मिधानि के जीएम (एचआर) श्री ए रामकृष्ण राव, एजीएम (एचआर) श्री हरिकृष्ण वेल्लंकी, डीएम (एचआर) श्री दीपक पार्थसारथी और 3 चयनित कनिष्ठ सहायकों ने कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। उल्लेखनीय है कि मिशन के तहत कुल 10 लाख लोगों को सरकारी नौकरी दी जानी है। पहली किश्त में दि. 22.10.2022 को देश भर में विभिन्न सरकारी संगठनों द्वारा 75000 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र जारी किए गए।

## मिधानि द्वारा 'व्यवस्थित सुधार'

### पुस्तिका जारी की गई

मिधानि में निवारक सतर्कता के भाग के रूप में, मिधानि के सतर्कता विभाग द्वारा सुझाए गए प्रणालीगत सुधारों और मिधानि प्रबंधन द्वारा की गई कार्रवाई के संकलन वाली एक पुस्तिका 31 अक्टूबर 2022 को जारी की गई थी। पुस्तिका में व्यवस्थित सुधार के संकलित सुझावों में खरीद, सिविल कार्य, भर्ती और पदोन्नति, मानव संसाधनों से संबंधित नीतियां, वित्त और सुरक्षा जैसे व्यापक कार्यात्मक क्षेत्र शामिल हैं। पुस्तिका का विमोचन



डॉ. संजय कुमार झा, सीएमडी, मिधानि द्वारा डॉ. उपेन्द्र वेन्नम, आईपीओएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी, मिधानि की उपस्थिति में आयोजित एक समारोह में किया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री एन. गौरी शंकर राव और निदेशक (उ. एवं वि.) श्री टी. मुत्तुकुमार भी उपस्थित रहे।



समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

## 'समन्वय-2022' में मिधानि ने की अपनी उपस्थिति दर्ज

आगरा में एचएडीआर अभ्यास 'समन्वय-2022' के दौरान माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी को मिधानि द्वारा विकसित नवीनतम कवच क्षमताओं के बारे में जानकारी देना मिधानि के लिए सम्मान की बात रही। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के प्रतिनिधियों और भारतीय सशस्त्र बलों के जवानों ने मिधानि के नव विकसित "शौर्य" और "त्वरित" बीआरएलएमवी और अन्य व्यक्तिगत सुरक्षा कवच की प्रशंसा की है।



## स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन



मिधानि के स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन लोगो के अनावरण द्वारा संपन्न हुआ। साल भर चलने वाले समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी कामत ने डॉ. संजय कुमार झा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि, श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), के साथ स्वर्ण जयंती लोगो और बैनर का अनावरण से किया।

## वियतनाम के डिफेंस एक्सपो 2002 में मिधानि की भागीदारी



दि. 09 दिसंबर 2022 को वियतनाम के प्रधान मंत्री , महामहिम श्री फाममिन्ह चिह्न ने वियतनाम के डिफेंस एक्सपो 2022में भारतीय पवेलियन का उद्घाटन किया। अवसर पर भारतीय राजदूत वियतनाम संदीप आर्य ,टी नटराजन ,अतिरिक्त सचिव ( रक्षा उत्पादन) , रक्षा उत्पादन विभाग ,रक्षा मंत्रालय ,भारत सरकार और श्री टी मुत्तुकुमार ,निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) ,मिधानि और भारत की विभिन्न कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने उपस्थिति में दर्ज की। श्री टी. मुत्तुकुमार , .निदेशक (उ. एवं वि.) ने प्रधानमंत्री और वियतनाम के अन्य रक्षा प्रतिनिधियों को मिधानि की प्रदर्शनी दिखाई। वियतनाम रक्षा एक्सपो 2022

वियतनाम सरकार और अन्य आसियान देशों के साथ रक्षा गठजोड़ के लिए उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है।

## केएमएमएल प्लांट की सुविधा वृद्धि पर चर्चा की मिधानि ने की पहल

दि. 11 जनवरी 2023 को मिधानि और केरल सरकार के उपक्रम केएमएमएल के एक प्रतिनिधिमंडल ने श्री पी. राजीव ,माननीय उद्योग ,कानून और कॉयर मंत्री , केरल सरकार से मुलाकात की। उन्होंने केएमएमएल प्लांट की सुविधा वृद्धि पर चर्चा की है। चर्चा के दौरान मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा ने मंत्री जी से यह बात साझा की कि आज मैग्रीशियम बहुत महत्वपूर्ण हो गया है और कम कीमत पर टाइटेनियम स्पंज की खरीद करना एक बड़ी चुनौती है। बैठक में केएमएमएल के प्रबंध निदेशक श्री जे. चंद्रबोस ने भी परियोजना पर अपने विचार व्यक्त किए। इस परियोजना पर चर्चा के लिए एक समिति का गठन किया जा रहा है।





समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

## एयरो शो 'एयरो इंडिया 2023' में मिधानि ने 5 उत्पादन लॉन्च किए और 11 समझौता ज्ञापनों पर किए हस्ताक्षर :

13-17 फरवरी 2023 तक येलहंका, बेंगलुरु, भारत में आयोजित एयरो शो 'एयरो इंडिया 2023' का 14वां संस्करण मिधानि के लिए बहुत ही गत्यात्मक रहा। एयरो इंडिया 2023 के दौरान मिधानि द्वारा विकसित नए पांच स्वदेशी उत्पादों का डॉ. एसके झा, सीएमडी, मिधानि द्वारा क्रमशः निदेशक जीटीआरई श्री एसवी रमना मूर्ति, वैज्ञानिक 'एच', और श्री राजीव पुरी, सीएमडी, यंत्र इंडिया लिमिटेड; एयरमार्शल श्री सीआर मोहन, एवीएसएम, वीएसएम, सीनियर मेंटेनेंस स्टाफ ऑफिसर; श्रीमती वर्तिका शुक्ला, सीएमडी, ईआईएल; श्री गिरीश कुमार, ठक्कर, जीएम (एसईडी), कोरापुट, एचएएल और श्री एम एस वेंकटेश, ईडी (एचएएल-एफ एंड एफ) के साथ मिलकर मिधानि के स्टाल पर उद्घाटन किया गया। उद्घाटित उत्पादः- गैस टर्बाइन के लिए सुपरको 783 फास्टर; सुपरनी 76 गैस टर्बाइन इंजन घटकों के लिए फोर्जड बार्स; भारतीय मोल्टेनसाल्ट ब्रीडर रिएक्टर के लिए सुपरनी10003 फोर्जडबार्स; एमडीएन 6758A फोर्जड, हॉट रोलड बार्स व फ्लैट्स; और कंप्रेसर रोटर ब्लेड के लिए टाइटेनियम मिश्र धातु।

मिधानि ने 15.02.2023 को बंधन समारोह के दौरान माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी की उपस्थिति में डॉ. एस के झा, सीएमडी, मिधानि ने विभिन्न फर्मों के साथ ग्यारह समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए और उनका आदान-प्रदान किया।

एयरो शो के दौरान, एचएएल, जीटीआरई, एडीए और वायु सेना के विशेषज्ञों की टीम के साथ वैश्विक-राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार करते हुए स्वदेशी





समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space



एयरो शो 'एयरो इंडिया 2023' के 14वें संस्करण का उद्घाटन भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दि. 13 फरवरी को बेंगलुरु में स्थित येलहंका वायुसेना स्टेशन परिसर में किया गया। इसका वीडियो देखने के लिए यहाँ क्लिक करें :

<https://www.youtube.com/watch?v=xNf1VEq6JRg>

[https://www.youtube.com/watch?v=bLA\\_twVZCpl](https://www.youtube.com/watch?v=bLA_twVZCpl)

वैमानिकी सामग्री के निर्माण और आपूर्ति के लिए मिधानि की चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की गई।

मिधानि ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, नासिक, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, कोरापुट, हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल), विशाखापट्टणम, वेलस्पन स्पेशलिटी स्टील्स लिमिटेड, माइक्रोन इंस्ट्रूमेंट्स, चंडीगढ़, जय जगदंबा, मुंबई, बे फोर्ज, चेन्नई, ऊर्जा अभियान प्रा. लि., हैदराबाद, तमिलनाडु औद्योगिक निगम, आईआईटी, रुड़की और आईआईटी, बॉम्बे, एयरोस्पेस के साथ नौसेना सामग्री, अनुसंधान एवं विकास, निर्यात, स्वास्थ्य देखभाल और प्रशिक्षण आदि के विकास और विनिर्माण के क्षेत्र में अपने पंखों का विस्तार करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। मिधानि के लिए इन ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने का मुख्य उद्देश्य अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने की संभावनाओं का पता लगाना और आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त करना है।

डॉ. एसके झा ने कहा कि ये नए विकसित स्वदेशी उत्पाद आत्म-निर्भर भारत और प्रत्यक्ष आयात विकल्प की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और जिन





समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष तक  
From Deep Sea to Space

समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं, उनके भागीदारों के बीच अधिक सहयोग के लिए मार्ग आसान होगा।

उत्पादों के उद्घाटन और बंधन समारोह के अवसर पर श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उ. एवं वि.) और कंपनी के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

एयरो शो के दौरान, एचएएल, जीटीआरई, एडीए और वायु सेना के विशेषज्ञों की टीम



के साथ वैश्विक-राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार करते हुए स्वदेशी वैमानिक सामग्री के निर्माण और आपूर्ति के लिए मिधानि की चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की गई।

## शत्रु

सुनने के लिए क्लिक करें : <https://www.youtube.com/watch?v=h4CSMI2ofMg>

अज्ञेय

यहाँ पर धरोहर शीर्षक के अंतर्गत हिंदी साहित्य जगत के चर्चित साहित्यकार 'अज्ञेय' की एक कहानी दी जा रही है। आशा है, आपको हमारा यह प्रयास और कहानी पसंद आएगी।



सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च, 1911 एवं मृत्यु 4 अप्रैल, 1987 को हुआ था। हिंदी में अपने समय के सबसे चर्चित कवि, कथाकार, निबंधकार, पत्रकार, संपादक, यायावर, अध्यापक रहे हैं। अज्ञेय की प्रमुख रचनाएँ: भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, शेखर एक जीवनी, तार सप्तक, त्रिशंकु इत्यादि।

ज्ञान को एक रात सोते समय भगवान ने स्वप्न में दर्शन दिए और कहा, “ज्ञान, मैंने तुम्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर संसार में भेजा है। उठो, संसार का पुनर्निर्माण करो।”

ज्ञान जाग पड़ा। उसने देखा, संसार अंधकार में पड़ा है। और मानव-जाति उस अंधकार में पथ-भ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ती चली जा रही है। वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो उसे मानव-जाति को पथ पर लाना होगा, अंधकार से बाहर खींचना होगा, उसका नेता बनकर उसके शत्रु से युद्ध करना होगा।

और वह जाकर चौराहे पर खड़ा हो गया और सबको सुनाकर कहने लगा, “मैं मसीहा हूँ, पैगम्बर हूँ, भगवान का प्रतिनिधि हूँ। मेरे पास तुम्हारे उद्धार के लिए एक सन्देश है!”

लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। कुछ उसकी ओर देखकर हँस पड़ते, कुछ कहते, पागल है, अधिकांश कहते, यह हमारे धर्म के विरुद्ध शिक्षा देता है, नास्तिक है, इसे मारो! और बच्चे उसे पत्थर मारा

करते।

\* \* \* \*

आखिर तंग आकर वह एक अँधेरी गली में छिपकर बैठ गया, और सोचने लगा। उसने निश्चय किया कि मानव-जाति का सबसे बड़ा शत्रु है धर्म, उसी से लड़ना होगा।

तभी पास कहीं से उसने स्त्री के करुण क्रन्दन की आवाज़ सुनी। उसने देखा, एक स्त्री भूमि पर लेटी है, उसके पास एक छोटा-सा बच्चा पड़ा है, जो या तो बेहोश है, या मर चुका है, क्योंकि उसके शरीर में किसी प्रकार की गति नहीं है।

ज्ञान ने पूछा, “बहन, क्यों रोती हो?”

उस स्त्री ने कहा, “मैंने एक विधर्मी से विवाह किया था। जब लोगों को इसका पता चला, तब उन्होंने उसे मार डाला और मुझे निकाल दिया। मेरा बच्चा भी भूख से मर रहा है।”

ज्ञान का निश्चय और दृढ़ हो गया। उसने कहा, “तुम मेरे साथ आओ, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।” और उसे



अपने साथ ले गया।

ज्ञान ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया। उसने कहा, “धर्म झूठा बंधन है। परमात्मा एक है, अबाध है, और धर्म से परे है। धर्म हमें सीमा में रखता है, रोकता है, परमात्मा से अलग करता है, अतः हमारा शत्रु है।”

लेकिन किसी ने कहा, “जो व्यक्ति पराई और बहिष्कृत औरत को अपने पास रखता है, उसकी बात हम क्यों सुनें! वह समाज से पतित है, नीच है।” तब लोगों ने उसे समाज च्युत करके बाहर निकाल दिया।

\* \* \* \*

ज्ञान ने देखा कि धर्म से लड़ने से पहले समाज से लड़ना है। जब तक समाज पर विजय नहीं मिलती, तब तक धर्म का खंडन नहीं हो सकता। तब वह इसी प्रकार का प्रचार करने लगा।

वह कहने लगा, “ये धर्म ध्वजी, ये पुंगी-पुरोहित, मुल्ला, ये कौन हैं? इन्हें क्या अधिकार है हमारे जीवन को बाँध रखने का? आओ, हम इन्हें दूर कर दें, एक स्वतन्त्र समाज की रचना करें, ताकि हम उन्नति के पथ पर बढ़ सकें।”

तब एक दिन विदेशी सरकार के दो सिपाही आकर उसे पकड़ ले गए, क्योंकि वह वर्गों में परस्पर विरोध जगा रहा था।

\* \* \* \*

ज्ञान जब जेल काटकर बाहर निकला, तब उसकी छाती में इन विदेशियों के प्रति विद्रोह धधक रहा था। ये ही तो हमारी क्षुद्रताओं को स्थाई बनाए रखते हैं, और उससे लाभ उठाते हैं! पहले अपने को विदेशी प्रभुत्व से मुक्त करना होगा, तब समाज को तोड़ना होगा, तब... और वह गुप्त रूप से विदेशियों के विरुद्ध

लड़ाई का आयोजन करने लगा। एक दिन उसके पास एक विदेशी आदमी आया। वह मैले-कुचले, फटे-पुराने, खाकी कपड़े पहने हुए था। मुख पर झुरियाँ पड़ी थीं, आँखों में एक तीखा दर्द था। उसने ज्ञान से कहा, “आप मुझे कुछ काम दें ताकि मैं अपनी रोज़ी कमा सकूँ। मैं विदेशी हूँ, आपके देश में भूखा मर रहा हूँ। कोई भी काम आप मुझे दें, मैं करूँगा। आप परीक्षा लें। मेरे पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं है।”

ज्ञान ने खिन्न होकर कहा, “मेरी दशा तुमसे कुछ अच्छी नहीं है, मैं भी भूखा हूँ।”

वह विदेशी एकाएक पिघल-सा गया। बोला, “अच्छा! मैं आपके दुख से बहुत दुखी हूँ। मुझे अपना भाई समझें। यदि आपस में सहानुभूति हो, तो भूखे मरना मामूली बात है। परमात्मा आपकी रक्षा करें। मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ?”

\* \* \* \*

ज्ञान ने देखा कि देशी-विदेशी का प्रश्न तब उठता है, जब पेट भरा हो। सबसे पहला शत्रु तो यह भूख ही है। पहले भूख को जीतना होगा, तभी आगे कुछ सोचा जा सकेगा...

और उसने ‘भूखे के लड़ाकों’ का एक दल बनाना शुरू किया, जिसका उद्देश्य था अमीरों से धन छीनकर सब में समान रूप से वितरण करना, भूखों को रोटी देना, इत्यादि; लेकिन जब धनिकों को इस बात का पता चला, तब उन्होंने एक दिन चुपचाप अपने चरो द्वारा उसे पकड़ मँगवाया और एक पहाड़ी किले में कैद कर दिया। वहाँ एकांत में उसे सताने के लिए नित्य एक मुट्ठी चबैना और एक लोटा पानी दे देते, बस।

धीरे-धीरे ज्ञान का हृदय ग्लानि से भरने लगा। जीवन



उसे बोझ जान पड़ने लगा। निरन्तर यह भाव उसके भीतर जगा करता कि मैं, ज्ञान, परमात्मा का प्रतिनिधि, इतना विवश हूँ कि पेट-भर रोटी का प्रबंध मेरे लिए असंभव है! यदि ऐसा है, तो कितना व्यर्थ है यह जीवन, कितना छुँछा, कितना बेमानी!

एक दिन वह क़िले की दीवार पर चढ़ गया। बाहर खाई में भरा हुआ पानी देखते-देखते उसे एकदम से विचार आया और उसने निश्चय कर लिया कि वह उसमें कूद कर प्राण खो देगा। परमात्मा के पास लौटकर प्रार्थना करेगा कि मुझे इस भार से मुक्त करो, मैं तुम्हारा प्रतिनिधि तो हूँ, लेकिन ऐसे संसार में मेरा स्थान नहीं है। वह स्थिर, मुग्ध दृष्टि से खाई के पानी में देखने लगा। वह कूदने को ही था कि एकाएक उसने देखा, पानी में उसका प्रतिबिम्ब झलक रहा है और मानो कह रहा है, "बस, अपने-आपसे लड़ चुके?"

\* \* \* \*

ज्ञान सहमकर रुक गया, फिर धीरे-धीरे दीवार पर से नीचे उतर आया और क़िले में चक्कर काटने लगा। और उसने जान लिया कि जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरन्तर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं।

### सरकारी ई-मार्केट प्लेस (जेम) ने किया मिथानि का उल्लेख

कठिनाइयों से मुक्त खरीद प्रक्रिया अर्थात सरकारी ई-मार्केट प्लेस (जेम) के माध्यम से मिश्र धातु निगम लिमिटेड ने इस वित्तीय वर्ष की शुरुआत से 28 फरवरी 23 तक कुल 117 करोड़ रुपये की खरीदारी की है। [https://twitter.com/GeM\\_India/s/1635854458142834688](https://twitter.com/GeM_India/s/1635854458142834688)

GeM  
Government  
e Marketplace  
Efficient • Transparent • Inclusive

MIDHANI

75  
Azadi Ka  
Amrit Mahotsav

End to End procurements  
made easy!

Mishra Dhatu Nigam Limited  
has achieved procurement worth

₹ 117 CR /

in this FY, so far!

\*As on 28<sup>th</sup> February 2023



भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू मिधानि द्वारा निर्मित आर्मर वाहन को देखते हुए। वाहन की जानकारी देते हुए मिधानि के सीएमडी डॉ. एसके झा और निदेशक (उ. एवं वि.) श्री टी. मुत्तुकुमार।



भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू मिधानि के उत्पाद देखते हुए। मिधानि के सीएमडी डॉ. एसके झा और निदेशक (उ. एवं वि.) श्री टी. मुत्तुकुमार उत्पादों की जानकारी देते हुए।

